# Settlement



1. प्रश्न :- ग्रामीण तथा नगरीय बस्तियों की संकल्पना प्रस्तुत करें ।

उत्तर :- बस्ती वह निर्दिष्ट क्षेत्र है जहाँ मनुष्य अधिवासित रहता है । अधिवास की दृष्टि से यह स्थाई और अस्थाई दोनों ही हो सकता है । विश्व में अधिकतर अधिवासित स्थान स्थाई बस्तियाँ होती हैं । अस्थाई बस्तियाँ मुख्यतः जनजातियों की या विशिष्ट परिस्थितियों की अभिव्यक्ति है ।

स्थाई बस्तियों को दो प्रकार से वर्गीकृत करते हैं :

(1) ग्रामीण बस्ती ।
(2) नगरीय बस्ती ।

(1) ग्रामीण बस्ती :

दोनों की विकास एवं संरचना अलग-अलग है। ग्रामीण बस्तियों का विकास वैसे स्तरों पर होता है जिसके आस-पास प्राथमिक क्रियाएँ हेतु पर्याप्त भूमि उपलब्ध हो, अतः ग्रामीण बस्तियाँ प्रकीर्ण शैली होती है। इसका आकार अनुकूल परिस्थितियों तथा प्राथमिक कार्यों पर निर्भर करता है । इसके विपरीत नगरीय बस्तियाँ सामान्यतः केन्द्रीय स्थल पर विकसित होती है ।

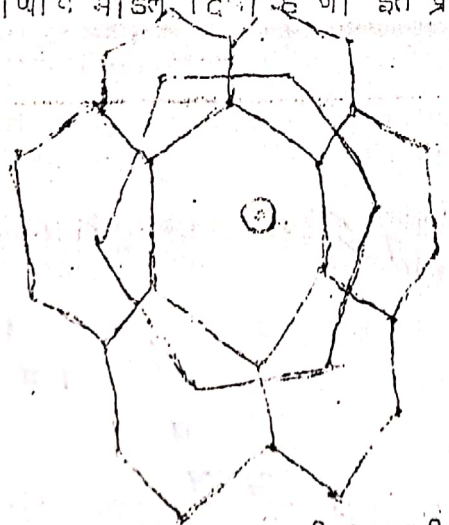

क्रिस्टोलर के अनुसार :- कई ग्रामीण बस्तियों के मध्य सर्वाधिक अनुकूल जगहों पर नगरीय बस्तियाँ विकसित होती है । इन्होंने ज्यामितीय ढंग से अवलोकन करते हुए षट्कोणीय मॉडल दिया है जो इस प्रकार है :-




वस्तुतः ग्रामीण नगरीय बस्तियों में निम्नलिखित मौलिक संकल्पनात्मक भिन्नताएँ हैं :—

| ग्रामीण बस्ती | नगरीय बस्ती |
|---|---|
| 1. ग्रामीण बस्तियाँ आकार में छोटी होती है एवं निश्चित आकार की नहीं होती हैं। ग्रामीण बस्ती एक व्यक्ति के अधिवास से भी बनती है। | 1. नगरीय बस्तियाँ आकार में बड़े तथा परिभाषित आकार की होती है। जैसे- भारत में पाँच हजार व्यक्ति अनिवार्य है, परन्तु स्वीडन, फिनलैंड जैसे देशों में मात्र 200 सौ व्यक्तियों के अधिवास से भी नगरीय बस्तियों का विकास होता है। |
| 2. सामान्यतः ग्रामीण बस्तियों की परिभाषित आकारिकी नहीं होती, लेकिन कई समुदायों के गाँवों के मध्य में धार्मिक स्थल पाये जाते हैं जैसे- रोमन कैथोलिक चर्च (इटली, पुर्तगाल) के चारो तरफ ग्रामीण बस्ती का विकास। पठारी क्षेत्र के जनजातीय बस्तियों के मध्य तालाब का होना इसकी विशेषता है। | 2. नगरीय संरचना की आकारिकी होती है तथा नगर के केन्द्र में बाजार होता है और इसके किनारे विभिन्न आय वर्गों के अधिवासीय बस्तियाँ होती है तथा वाह्य क्षेत्र में अभिगमन की वृद्धि होती है। (यह सिर्फ नगरीय बस्ती की विशेषता है।) |




नगर की आकारिकी

बाजार

1 बाजार
2 संक्रमण
3 निम्न आय
4 मध्य एवं उच्च आय
5 अभिगमन क्षेत्र

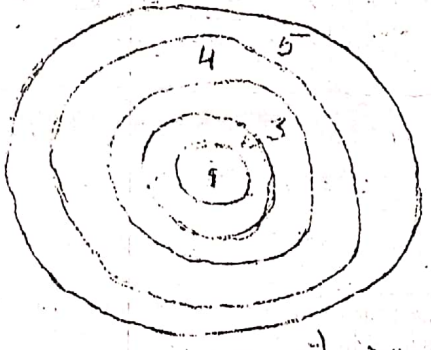

| ग्रामीण बस्ती | नगरीय बस्ती |
|---|---|
| 3. ग्रामीण बस्ती में कृषि और पशुपालन प्रमुख विशेषता है और ये कार्य बस्ती के वाह्य क्षेत्र में होता है। | 3. नगरीय बस्तियों में गैर कृषि कार्य की विशेषता होती है अर्थात् द्वितीय एवं तृतीयक प्रकार के कार्य का सम्पादन होता है। जैसे- कार्यालय, कॉलेज, उद्योग आदि। |
| 4. सामान्यतः ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक सेवा सुविधाएँ नहीं होती है। | 4. नगरीय बस्तियों में सार्वजनिक सेवा का विकास होता रहता है तथा भौतिक सुख-सुविधा के साधनों की सुविधा रहती है। |
| 5. ग्रामीण क्षेत्रों में आंतरिक परिवहन नहीं होते है। | 5. नगरीय बस्तियों में इसकी सुविधा होती है। (भौतिक सुख-सुविधा के साधन, आंतरिक परिवहन) |

Scanned with CamScanner

| | |
|---|---|
| 6. ग्रामीण क्षेत्रों में वाह्य जनसंख्या का आगमन नहीं होता है लेकिन पश्चिमी देशों में ये प्रवृत्ति विकसित हुई है। | 6. नगर ग्रामीण – नगरीय स्थानान्तरण का लक्ष्य होता है वस्तुतः नगरीय जनसंख्या वृद्धि का यह एक प्रमुख उदाहरण है इसका प्रमुख कारण मानवीय स्थानान्तरण है, जैसे – भारत के नगरीय जनसंख्या वृद्धि के एक – तिहाई भाग इसी का परिणाम है। |
| 7. ग्रामीण बस्तियाँ नगरों के लिए खाद्यान्न, कच्चे माल और श्रमिकों के आपूर्ति के स्त्रोत होते हैं। | 7. नगरीय बस्तियाँ ग्रामीण क्षेत्रों में नवोत्पाद के वितरण के स्त्रोत होते हैं। नगरीय बस्तियाँ ही ग्रामीण बस्तियों को शिक्षा, स्वास्थ्य, संचार, परिवहन और अन्य प्रकार की सुविधाएँ प्रदान करता है। |

इस प्रकार ऊपर के तर्कों से स्पष्ट है कि ग्रामीण और नगरीय बस्तियों की विशेषताओं में कई मौलिक अन्तर है, लेकिन जैफरसन महोदय के अनुसार मौलिक विविधताओं के बावजूद वे एक-दुसरे के पूरक है। उन्हीं के शब्दों में "नगर अपने-आप विकसित नहीं होते हैं आस-पास के ग्रामीण क्षेत्र केन्द्रीय स्थलों को केन्द्रीय कार्यों के लिए प्रोत्साहित करते हैं जिससे कि नगरीय बस्तियों का विकास होता है।" अतः जिस क्षेत्र के ग्रामीण बस्तियाँ संसाधनात्मक दृष्टि से अधिक सम्पन्न होगा, नगरों का विकास भी उतना ही अधिक होगा।

नवीन प्रवृत्ति :– यद्यपि ग्रामीण और नगरीय बस्तियों में मौलिक विभिन्नताएँ हैं, परन्तु आधुनिक समय में दो महत्वपूर्ण प्रवृत्तियों का विकास हुआ है।

(1) वर्त्तमान समय में एकीकृत प्रादेशिक नियोजन के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में भी अनेक नगरीय सुविधाओं का विकास एवं विस्तार हो रहा है। यहाँ तक कि ग्रामीण औद्योगिकीकरण के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में ही द्वितीयक और तृतीयक कार्यों का विकास किया जा रहा है।

(2) विकसित देशों में नगरीय – ग्रामीण स्थानान्तरण की प्रवृत्ति प्रारम्भ हुई है। अतः बड़ी संख्या में लोग नगरों की कोलाहल को छोड़कर ग्रामीण क्षेत्र की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

इस दोनों कारकों के बावजूद एक तीसरे प्रकार की बस्ती के विकास की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई है। ये बस्तियाँ ग्रामीण और नगरीय कार्यों के मिश्रण से विकसित हो रही है। इन्हें ग्रामीण सह-नगरीय या ग्रामीण नगरीय उपपात या रर्बन (Rurban) बस्ती कहते हैं। V.V.I.

Scanned with CamScanner